

सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-8: ईश्वर से अनुराग



भारत में मध्ययुगीन काल न केवल कई राजनीतिक विकास और भारत में एक स्थिर साम्राज्य की स्थापना के लिए जाना जाता था, बल्कि मौजूदा धर्मों की तह के भीतर विभिन्न आंदोलनों के उद्भव के लिए भी जाना जाता था। कई संतों ने ईश्वर की सच्ची भक्ति पर जोर दिया और प्रचलित जाति व्यवस्था की आलोचना की। इस समय के धार्मिक विकास मुख्यतः भक्ति और सूफी आंदोलनों द्वारा किए गए थे।

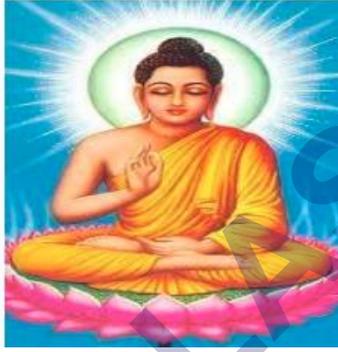
एक सर्वोच्च भगवान की पूजा

- प्राचीन काल में लोग अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे। हालाँकि बड़े साम्राज्यों के गठन के बाद, लोगों ने मृत्यु के बाद के जीवन के विचार पर विश्वास करना शुरू कर दिया।
- वे जाति व्यवस्था में भी विश्वास करते थे जो सभी लोगों को समानता से वंचित करती थी। बाद में, कई लोगों ने इन धारणाओं का विरोध करना शुरू कर दिया और सामाजिक मतभेदों को दूर करने के लिए बौद्ध धर्म और जैन धर्म को स्वीकार किया।
- लोगों का एक वर्ग एक सर्वोच्च ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने लगा, जो उन्हें भक्ति या भक्ति के मार्ग के माध्यम से समाज में मौजूद असमानताओं से मुक्त कर सकता है।
- तीन देवताओं शिव, विष्णु और दुर्गा की पूजा की जाने लगी क्योंकि उन्हें सर्वोच्च देवता माना जाने लगा।
- ये घटनाक्रम भी पुराणों का हिस्सा बन गए। जबकि पुराणों ने समाज में पूजा के तरीकों की शुरुआत की, उन्होंने इस विचार पर भी जोर दिया कि एक व्यक्ति भक्ति के माध्यम से अपनी जाति के बावजूद भगवान की कृपा प्राप्त कर सकता है।
- बाद में, भक्ति का यह सिद्धांत इतना व्यापक हो गया कि इसे जैनियों और बौद्धों ने भी अपनाया।

एक सर्वोच्च भगवान की पूजा

- प्राचीन काल में लोग अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे। हालाँकि बड़े साम्राज्यों के गठन के बाद, लोगों ने मृत्यु के बाद के जीवन के विचार पर विश्वास करना शुरू कर दिया।
- वे जाति व्यवस्था में भी विश्वास करते थे जो सभी लोगों को समानता से वंचित करती थी। बाद में, कई लोगों ने इन धारणाओं का विरोध करना शुरू कर दिया और सामाजिक मतभेदों को दूर करने के लिए बौद्ध धर्म और जैन धर्म को स्वीकार किया।
- लोगों का एक वर्ग एक सर्वोच्च ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने लगा, जो उन्हें भक्ति या भक्ति के मार्ग के माध्यम से समाज में मौजूद असमानताओं से मुक्त कर सकता है।

- तीन देवताओं शिव, विष्णु और दुर्गा की पूजा की जाने लगी क्योंकि उन्हें सर्वोच्च देवता माना जाने लगा।
- ये घटनाक्रम भी पुराणों का हिस्सा बन गए। जबकि पुराणों ने समाज में पूजा के तरीकों की शुरुआत की, उन्होंने इस विचार पर भी जोर दिया कि एक व्यक्ति भक्ति के माध्यम से अपनी जाति के बावजूद भगवान की कृपा प्राप्त कर सकता है।
- बाद में, भक्ति का यह सिद्धांत इतना व्यापक हो गया कि इसे जैनियों और बौद्धों ने भी अपनाया।



परमेश्वर का विचार

बड़े-बड़े राज्यों के उदय होने से पहले, भिन्न-भिन्न समूहों के लोग अपने-अपने देवी-देवताओं की पूजा करते थे। जब लोग, नगरों के विकास और व्यापार तथा सम्राज्यों के माध्यम से एक साथ आते गए, तब नए-नए विचार विकसित होने लगे यदि मनुष्य भक्तिभाव से परमेश्वर की शरण में जाए तो परमेश्वर, व्यक्ति को इस बंधन से मुक्त कर सकता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्त यह विचार, सामान्य सन (ईस्वी सन) की प्रारंभिक शताब्दियों में लोकप्रिय हो गया था। विशद धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से शिव, विष्णु तथा दुर्गा को परम देवी-देवताओं के रूप में पूजा जाने लगा।

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन

- सातवीं शताब्दी में, नयनार (शिव के उपासक संत) और अलवर (विष्णु के उपासक संत) के नेतृत्व में दक्षिण भारत में नए धार्मिक आंदोलनों का उदय हुआ। इन दो धार्मिक आंदोलनों के लोग भी पनार और पुलैयर जैसी निचली जातियों के थे।



- इन आंदोलनों के अनुयायियों ने बौद्ध धर्म और जैन धर्म की आलोचना की और जोर देकर कहा कि केवल शिव या विष्णु की पूजा करने से ही मोक्ष का मार्ग प्राप्त हो सकता है।
- उन्हें संगम साहित्य पर गर्व था और उन्होंने उन्हें भक्ति के मूल्यों के साथ मिश्रित किया।
- नारायण और अलवर ने गांवों का दौरा किया और पास के मंदिरों में विराजमान देवताओं की स्तुति में कई कविताओं की रचना की।
- बाद में, चोल और पांड्य राजाओं ने इन मंदिरों के चारों ओर मंदिरों का निर्माण किया जिसने भक्ति परंपरा और मंदिर पूजा के बीच संबंधों को मजबूत किया।
- इसी समय के आसपास नारायणों और अलवरों की जीवनी (धार्मिक आत्मकथाएँ) रची जाने लगीं। इन ग्रंथों को आज भक्ति परंपरा के इतिहास लिखने के स्रोतों के रूप में उपयोग किया जाता है।

शंकराचार्य

शंकर भारत के सर्वाधिक प्रभावशाली दार्शनिकों में से हैं। जिनका जन्म आठवीं शताब्दी में केरल प्रदेश में हुआ था। वे अद्वैतवाद के समर्थक थे, जिसके अनुसार जीवात्मा और परमात्मा (जो परम सत्य है), दोनों एक ही हैं। उन्होंने यह शिक्षा दी कि ब्रह्मा, जो एकमात्र या परम सत्य है, वह निर्गुण और निराकार है।

शंकर ने हमारे चारों ओर के संसार को मिथ्या या माया माना और संसार का परित्याग करके संन्यास लेने और मोक्ष प्राप्त करने के लिए ज्ञान के मार्ग को अपनाने का उपदेश दिया। रामानुज ग्यारहवीं शताब्दी में तमिलनाडु में पैदा हुए थे।

वे विष्णु भक्त अलवार संतो से बहुत प्रभावित थे। रामानुज ने विशिष्टाद्वैत के सिद्धांत को प्रतिपादित किया जिसके अनुसार आत्मा, परमात्मा से जुड़ने के बाद भी अपनी अलग सत्ता बनाए रखती है।

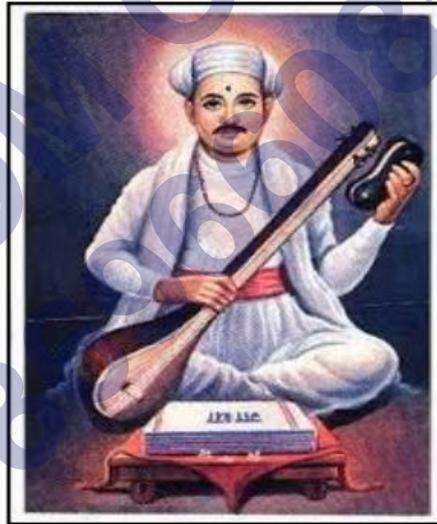
बसवन्ना का वीरशैववाद और महाराष्ट्र के संत

बसवन्ना का वीरशैववाद

- वीरशैव आंदोलन बसवन्ना और उनके साथियों जैसे अल्लमा प्रभु और अक्कमहादेवी द्वारा प्रतिपादित किया गया था।
- यह आंदोलन कर्नाटक में बारहवीं शताब्दी के मध्य में शुरू हुआ।
- वीरशैवों ने सभी लोगों विशेषकर निचली जातियों और महिलाओं को समानता का उपदेश दिया। वे ब्राह्मणों के वर्चस्व में भी विश्वास नहीं करते थे।
- उन्होंने मूर्ति पूजा और कर्मकांडों को खारिज कर दिया।

महाराष्ट्र के संत

- तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक कई संत कवियों ने महाराष्ट्र के लोगों को प्रेरित किया।
- इन संत कवियों ने मराठी में अपनी शिक्षाओं का प्रचार किया जिसे आम लोगों के लिए समझना आसान था।
- इस काल के कुछ महत्वपूर्ण संत नामदेव, एकनाथ, ज्ञानेश्वर और तुकाराम थे। सखुबाई एक महिला संत थीं जो अछूत 'महार' जाति की थीं।



- इस क्षेत्र के कई संतों ने पंढरपुर के मंदिर में भगवान विठ्ठल (भगवान विष्णु का रूप) की भक्ति पर ध्यान केंद्रित किया।
- वे इस विचार में भी विश्वास करते थे कि ईश्वर सभी लोगों के दिलों में निवास करता है।
- महाराष्ट्र में संत कर्मकांड और जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं करते थे। वे इस विचार में भी विश्वास नहीं करते थे कि मोक्ष पाने के लिए संसार का त्याग करना चाहिए। उनके अनुसार परिवार के साथ रहकर भी मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

• इस समय के कवि संतों को मानवतावादी कहा जा सकता है क्योंकि वे अन्य लोगों के दर्द और दुखों को साझा करने में विश्वास करते थे।

वीरशैववाद और महाराष्ट्र के संतों के अलावा, भारत में कई अन्य धार्मिक समूहों ने सरल भाषा और तार्किक तर्कों का उपयोग करके जाति व्यवस्था और अनुष्ठानों की आलोचना की। ये समूह थे नाथपंथी, सिद्धाचार और योगी। उन्होंने लोगों से सांसारिक सुखों को त्यागने के लिए कहा क्योंकि मोक्ष का मार्ग परम वास्तविकता के साथ एकता के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जो केवल योगासन, श्वास अभ्यास और मध्यस्थता से ही संभव है। ये समूह निचली जातियों के लोगों के बीच अधिक लोकप्रिय हो गए।

इस्लाम और सूफीवाद

संतो और सूफियों में बहुत अधिक समानता थी, यहाँ तक की यह भी माना जाता है की उन्होंने आपस में कई विचारों का आदान-प्रदान किया और उन्हें अपनाया। सूफी मुसलमान रहस्यवादी थे। वे धर्म के बाहरी आडंबरों को अस्वीकार करते हुए ईश्वर के प्रति और भक्ति तथा सभी मनुष्यों के प्रति दयाभाव रखने पर बल देते थे।

इस्लाम ने एकेश्वरवाद यानि एक अल्लाह के प्रति पूर्ण समर्पण का दृढ़ता से प्रचार किया। आठवीं और नवीं शताब्दी में धार्मिक विद्वानों ने पवित्र कानून (शरिया) और इस्लामिक धर्मशास्त्र के विभिन्न पहलुओं को विकसित किया।

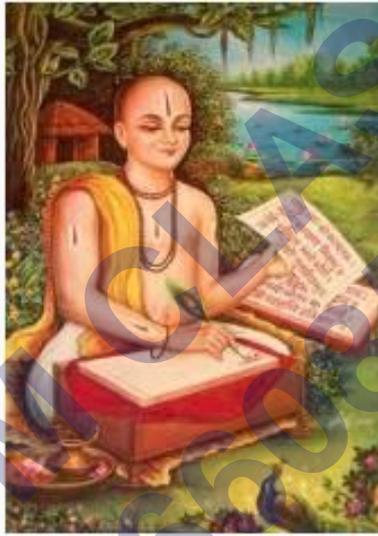
ईस्लाम धीरे-धीरे और जटिल होता गया जबकि सूफियों ने एक अलग रास्ता दिखाया जो ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत समर्पण पर बल दिया सूफी लोगों ने मुसलिम धार्मिक विद्वानों द्वारा निर्धारित विशद कर्मकांड और आचार-संहिता को बहुत अस्वीकार कर दिया।

वे ईश्वर के साथ ठीक उसी प्रकार जुड़े रहना चाहते, जिस प्रकार एक प्रेमी, दुनिया की परवाह किए बिना अपनी प्रियतमा के साथ जुड़े रहना चाहता है। औलिया या पीर की देख-रेख में ज़िक्र, चिंतन, रक्स, निति-चर्चा, साँस पर नियंत्रण सूफी सिलसिलाओं का प्रादुर्भाव हुआ।

ग्यारहवीं शताब्दी से अनेक सूफी जन मध्य एशिया से आकर हिंदुस्तान में बसने लगे थे। जैसे – अजमेर के ख्वाजा मुइनुद्दीन, दिल्ली के कुतबुद्दीन बखितयार काकी, पंजाब के बाबा फ़रीद, दिल्ली के ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया और गुलबर्ग के बंदानवाज गीसुदराज।

उत्तर भारत में धार्मिक विकास

- तेरहवीं शताब्दी के बाद उत्तर भारत में धार्मिक विकास का एक नया रूप देखा गया। कई नए संतों ने लोगों को सरल भाषा में अपनी शिक्षाओं का प्रचार किया और समाज के हर वर्ग के लोगों को प्रभावित किया। इन संतों ने विविध विचारों का प्रचार किया।
- जबकि कबीर और गुरु नानक जैसे संतों ने सभी धर्मों में मौजूद रुढ़िवाद के तत्व को खारिज कर दिया, तुलसीदास और सूरदास ने मौजूदा मान्यताओं और प्रथाओं को स्वीकार कर लिया।
- भगवान राम के भक्त तुलसीदास ने अवधी भाषा में 'रामचरितमानस' की रचना की। दूसरी ओर सूरदास ने भगवान कृष्ण की पूजा की और सूरसागर और सुरसरवल्ली जैसे प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों की रचना की।



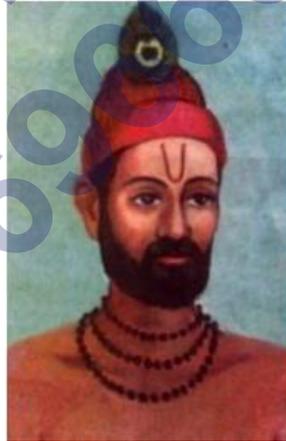
- असम के शंकरदेव, भगवान कृष्ण के एक भक्त, असमिया में नाटक लिखे। उन्हें नामघरों या पाठ और प्रार्थना के घरों की स्थापना के अभ्यास का श्रेय दिया जाता है।
- अन्य उल्लेखनीय संत मीराबाई, रविदास और दादू दयाल थे। मीराबाई एक राजपूत राजकुमारी होने के नाते भगवान कृष्ण की भक्ति में भजन (भक्ति गीत) की रचना की। उसने उच्च जातियों के लोगों द्वारा पालन किए जाने वाले रीति-रिवाजों और रीति-रिवाजों को चुनौती दी। वह गुजरात और राजस्थान की लोकप्रिय जनता के बीच प्रसिद्ध हुईं। वह निम्न जाति के संत रविदास की शिष्या थीं।



- अधिकांश संतों की रचनाएँ क्षेत्रीय भाषाओं में रची गई थीं और लोगों द्वारा आसानी से समझी जा सकती थीं। उनके लिखे गीत बहुत लोकप्रिय हुए हैं। वे मौखिक रूप से पीढ़ियों से पीढ़ियों तक प्रसारित होते रहे हैं और आज भी गाए जाते हैं, हालांकि एक बदले हुए रूप में।

कबीर

पंद्रहवीं-सोलहवीं सदी में एक अत्यधिक प्रभावशाली संत थे। कबीर, निराकार परमेश्वर में विश्वास रखते थे। उन्होंने यह उपदेश दिया कि भक्ति के माध्यम से ही मोक्ष यानी मुक्ति प्राप्त हो सकती है। हिंदू तथा मुसलमान दोनों लोग उनके अनुयायी हो गए।



- पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी के दौरान रहते थे। वह इस काल के सबसे प्रभावशाली संत थे।
- संत कबीर बनारस शहर में रहने वाले एक मुस्लिम बुनकर के परिवार में पले-बढ़े।
- हम उनके जीवन की घटनाओं के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते हैं।
- हम उनके बारे में सखियों और पैड नामक छंदों के एक बड़े संग्रह से जानकारी एकत्र करते हैं। ये उनके द्वारा रचित थे और भटकते भजन गायकों द्वारा गाए गए थे।
- इनमें से कुछ को गुरु ग्रंथ साहिब, पंचवाणी और बीजक में संरक्षित किया गया था।

बाबा गुरु नानक

- बाबा गुरु नानक का जन्म वर्तमान पाकिस्तान के तलवंडी में हुआ था।
- उन्होंने करतारपुर में एक केंद्र की स्थापना की जहां उनके अनुयायी पूजा करते थे और उनके भजन गाते थे। वे यहां इकट्ठे हुए और किसी भी जाति या पंथ के बावजूद लंगर या रसोई में भोजन किया।
- गुरु नानक द्वारा स्थापित इस पवित्र स्थान को एक धर्म के रूप में जाना जाने लगा, जिसे अब गुरुद्वारा के रूप में जाना जाता है।
- गुरु नानक ने एक ईश्वर की पूजा पर जोर दिया और उस सामाजिक व्यवस्था में विश्वास नहीं किया जिसने मानव जाति में अंतर पैदा किया।



- वह नाम (सही पूजा), दान (दूसरों का कल्याण) और इंसान (आचरण की शुद्धता) के सिद्धांतों में विश्वास करते थे। वह सही विश्वास और पूजा करने, ईमानदार जीवन जीने और दूसरों की मदद करने में भी विश्वास करता था।
- उनके अनुसार, मुक्ति के विचार में एक सक्रिय जीवन जीना शामिल था जिसमें सामाजिक प्रतिबद्धता की एक मजबूत भावना शामिल थी।
- गुरु नानक ने 1539 में अपनी मृत्यु से पहले अपने एक अनुयायी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। उन्हें गुरु अंगद के नाम से जाना जाने लगा।
- गुरु अंगद ने गुरु नानक की रचनाओं को एक नई लिपि में संकलित किया जिसे गुरुमुखी कहा जाता है। उनके उत्तराधिकारियों ने भी 'नानक' के नाम से लिखा। इस संकलन को इस समय की अन्य प्रमुख हस्तियों जैसे संत कबीर, नामदेव, गुरु तेग बहादुर आदि के लेखन में जोड़ा गया।

- बाद में, गुरु गोबिंद सिंह ने संकलन को मान्य किया और इसे अब गुरु ग्रंथ साहिब के नाम से जाना जाता है।
- विभिन्न जातियों, समुदायों और व्यवसायों के लोग गुरु नानक के अनुयायी बने।
- सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में, रामदासपुर (अमृतसर) शहर हरमंदिर साहिब (अब स्वर्ण मंदिर के रूप में जाना जाता है) नामक मुख्य गुरुद्वारा के आसपास विकसित हुआ।
- सिक्ख समुदाय सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में शक्तिशाली हो गया।
- मुगल सम्राट जहांगीर ने गुरु अर्जन देव को फांसी देने का आदेश दिया। सिख आंदोलन को गुरु गोबिंद सिंह द्वारा शुरू की गई खालसा संस्था से मजबूती मिली। सिखों का समुदाय जिसे खालसा पंथ के नाम से जाना जाता है, एक शक्तिशाली राजनीतिक इकाई बन गया।

SHIVOM CLASSES
8696608541

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 120)

प्रश्न 1 निम्नलिखित में मेल बैठाएँ:-

(क) बुद्ध	नामघर
(ख) शंकरदेव	विष्णु की पूजा
(ग) निजामुद्दीन औलिया	सामाजिक अंतरों पर सवाल उठाए
(घ) नयनार	सूफी संत
(ङ) अलवार	शिव की पूजा

उत्तर -

(क) बुद्ध	सामाजिक अंतरों पर सवाल उठाए
(ख) शंकरदेव	नामघर
(ग) निजामुद्दीन औलिया	सूफी संत
(घ) नयनार	शिव की पूजा
(ङ) अलवार	विष्णु की पूजा

प्रश्न 2 रिक्त स्थान की पूर्ति करें:-

- (क) शंकर _____ के समर्थक थे।
- (ख) रामानुज _____ के द्वारा प्रभावित हुए थे।
- (ग) _____ , _____ और _____ वीरशैव मत के समर्थक थे।
- (घ) _____ महाराष्ट्र में भक्ति परंपरा का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

उत्तर -

- (क) शंकर अद्वैत के समर्थक थे।

(ख) रामानुज अलवार के द्वारा प्रभावित हुए थे।

(ग) वसवन्ना, अल्लामा प्रभु, और ज अक्का महादेवी वीरशैव मत के समर्थक थे।

(घ) पंढरपुर महाराष्ट्र में भक्ति परंपरा का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

प्रश्न 3 नाथपंथियों, सिद्धों और योगियों के विश्वासों और आचार-व्यवहारों का वर्णन करें।

उत्तर – इस काल में अनेक ऐसे धार्मिक समूह उभरे जिन्होंने साधारण तर्क वितर्क का सहारा लेकर रूढ़िवादी धर्म के कर्मकाण्डों और अन्य बनावटी पहलुओं तथा समाज व्यवस्था की अलोचना की। उनमें नाथपंथी, सिद्धों और योगी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने संसार का परित्याग करने का समर्थन किया। उनके विचार से निराकार परम सत्य का चिन्तन – मनन और इसके साथ हो जाने की अनुभूति ही मोक्ष का मार्ग है। इसके लिए उन्होंने योगासन, प्राणायाम और चिन्तन मनन जैसी क्रियाओं के माध्यम से मन एवं शरीर को कठोर प्रशिक्षण देने की आवश्यकता पर बल दिया। ये समूह खासतौर पर नीची कहीं जाने वाली जातियों में बहुत लोकप्रिय हुए। उनके द्वारा की गई रूढ़िवादी धर्म की अलोचना ने भक्तिमार्गीय धर्म के लिए आधार तैयार किया जो आगे चलकर उत्तरी भारत में लोकप्रिय शक्ति बना।

प्रश्न 4 कबीर द्वारा अभिव्यक्त प्रमुख विचार क्या-क्या थे ? उन्होंने इन विचारों को कैसे अभिव्यक्त किया ?

उत्तर – कबीर सम्भवतः पंद्रहवीं- सोलहवीं शताब्दी में हुए थे। वे अत्यधिक प्रभावशाली संत थे। हमें उनके विचारों की जानकारी उनकी साखियों और पदों के विशाल संग्रह से मिलती है, जिनके बारे में यह कहा जाता है कि इनकी रचना तो कबीर ने की थी परन्तु ये घुमंतू भजन गायकों द्वारा गाए जाते थे। कबीर के विचार प्रमुख धार्मिक परम्पराओं की पूर्ण एवं प्रचण्ड अस्वीकृति पर आधारित था। उनके उपदेशों में ब्राह्मणवादी हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों की बाह्य आडंबरपूर्ण पूजा के सभी रूपों का मजाक उड़ाया गया।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 121)

प्रश्न 5 सूफियों के व्यवहार क्या थे ?

उत्तर - सूफी मुसलमान रहस्यवादी थे। वे धर्म के बाहरी आडंबरो को अस्वीकार करते हुए ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति तथा सभी मनुष्यों के प्रति दयाभाव रखने पर बल देते थे। वे ईश्वर के साथ ठीक उसी प्रकार जुड़े रहना चाहते थे, जिस प्रकार एक प्रेमी, दुनिया की परवाह किए बिना अपनी प्रियतमा से जुड़े रहना चाहते हो।

प्रश्न 6 आपके विचार से बहुत से गुरुओं ने उस समय प्रचलित धार्मिक विश्वासों तथा प्रथाओं को अस्वीकार क्यों किया ?

उत्तर - हमारे विचार से बहुत - से गुरुओं ने उस समय प्रचलित विश्वासों तथा प्रथाओं को निम्नलिखित कारणों से अस्वीकार किया। बहुत से गुरु एक ही धार्मिक शक्ति में विश्वास करते थे। उनका विश्वास था कि प्रचलित धार्मिक विश्वास कर्मकांडा से छुटकारा पाकर ही नीची जातियों को मार में समानता पर लाया जा सकता है। बहुत से गुरुओं ने ईश्वर भक्ति के अधिकार करना चाहा। वे ईश्वर की भक्ति को बड़े - बड़े से मुक्त करके सरल बनाना चाहते थे।

प्रश्न 7 बाबा गुरु नानक की प्रमुख शिक्षाएँ क्या थी ?

उत्तर - तलवंडी में जन्म लेने वाले बाबा गुरु नानक ने करतारपुर में एक केंद्र स्थापित करने से पहले कई यात्राएं की। उन्होंने अपने अनुयायियों के लिए करतारपुर में एक नियमित उपासना पद्धति अपनाई, जिनके अंतर्गत उन्हीं के भजनों को गाया जाता था। उनके अनुयायी अपने अपने पहले धर्म या जाति अथवा लिंग भेद को नजरअंदाज कर एक सांझी रसोई में इकट्ठा खाते पीते थे। उनका मानना था कि ईश्वर केवल एक हैं। ईश्वर को कभी जाति के अनुसार नहीं बांटना चाहिए। गुरुनानक सभी जाति और लिंग को एक सामान मानते थे। उनका कहना था कि अभी भी किसी को दुःख नहीं पहुंचना चाहिए।